E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारत की विदेश नीति के विचारधाराओं का चीन के साथ राजनयिक संबंध

[1] अंजना पाराशर

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, अमर शहीद चन्द्रषेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, निवाड़ी (म.प्र.)

[2]डॉ. ऊषा त्रिपाठी

[2]प्राध्यापक,राजनीति विज्ञान, अमर शहीद चन्द्रषेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, निवाड़ी (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/02/2025

Paper date Publishing Date

14/02/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.14911377

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

प्रस्तावना (Introduction):

आज विश्व के सभी राज्य एक–दूसरे से भौगोलिक दूरी पर स्थित होते हुए भी संचार के आधुनिक साधनों से निकट आ गये हैं। विश्व के किसी भी भाग में घटने वाली घटना दूसरे राष्ट्रों पर आवश्यक रूप से प्रभाव डालती है। विश्व के सभी राज्य किसी न किसी कारण से एक–दूसरे पर आश्रित है। यही कारण है कि वर्तमान में विश्व राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास तथा निर्माण को बहुत महत्त्व दिया जाता है। अपने विदेश सम्बन्धों को अपनी इच्छानुसार संचालित करने के लिए एक श्रेष्ठ विदेश नीति की आवश्यकता होती है।

भारत की विदेश नीति के उद्देश्य (Objectives of Indian Foreign Policy):
भारतीय संविधान की धारा 51 में विदेश नीति का निर्देशन करते हुए चार आदर्शों का वर्णन इस प्रकार किया गया है– अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की अभिवृद्धि राज्य – (क) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की अभिवृद्धि, (ख) राज्यों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखन, (ग) संगठित लोगो के एक–दूसरे व्यवहारों में अन्तर्राष्ट्रीय विधि और सन्धि वबाध्यताओं के प्रति आदर बढ़ाने का और (घ) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के मध्यस्थता (Arbitration) द्वारा निपटारे के लिए प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा।

इनके अतिरिक्त अन्य प्रमुख लक्ष्य निम्नलिखित है–

1. भारत को विश्व की महान् प्रभावशाली शक्ति बनाना।
2. भारत के औद्योगिक विकास के लिए दूसरे देशों से आर्थिक सहायता प्राप्त करना।
3. सर्वत्र उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद का विरोध करना।
4. एशिया तथा अफ्रीका के देशों के स्वतन्त्रता आन्दोलनों का समर्थन करना।
5. राष्ट्रमण्डल के देशों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रखना।
6. राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करना।
7. वैदेशिक व्यापार के विकास हेतु आवश्यक दशाओं की सृष्टि करना।
8. प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा करना।
9. पारस्परिक आर्थिक तथा जनहित के रक्षार्थ एशियायी अफ्रीकी देशों को संगठित करना।
10. संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा उससे सम्बद्ध उसकी अन्य संस्थाओं का समर्थन तथा उनसे सहयोग करना।

मुख्य बिन्दु : अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, औद्योगिक विकास, विदेश नीति के उद्देश्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारत की विदेश नीति के विचारधाराओं का चीन के साथ राजनयिक संबन्ध

भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्त्व (Determinating Factors of India's Foreign Policy)

डॉ. बी. पी. दत्त के शब्दों में, "ऐतिहासिक परम्पराओ, भौगोलिक स्थिति और भूतकालीन अनुभव भारतीय विदेश नीति के निर्माण में प्रभावक तत्त्व रहे हैं।" भारत की विदेश नीति के निर्माण में निम्न तत्त्वों ने योगदान दिया है[1]

भारत एवं चीन के राजनायक संबन्ध समय–समय पर परिवर्तित होते रहे है। जिस कारण से भारत की विभिन्न साकारों ने चीन के साथ संबन्ध बनाने का प्रयास किया है।

(1) भौगोलिक तत्त्व :

किसी भी देश की विदेश नीति के निर्धारण में भौगोलिक तत्त्व महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। के. एम. पणिक्कर के शब्दों में, "जब नीतियों का लक्ष्य प्रादेशिक सुरक्षा होता है तो उनका निर्धारण मुख्य रूप से भौगोलिक तत्व से हुआ करता है।" नेपोलियन बोनापार्ट ने भी एक बार कहा था कि, "किसी देश की विदेश नीति उसके भूगोल द्वारा निर्धारित होती है।" डॉ. जेम्स एमर्स के शब्द उल्लेखनीय है कि, "समझौते तोड़े जा सकते हैं, सन्धियों भी एकतरफा समाप्त की जा सकती है, परन्तु भूगोल अपने शिकार को कसकर पकड़े रहता है।" भारत की विदेश नीति के निर्धारण में भारत के आकार एशिया में उसकी विशेष स्थिति तथा दूर–दूर तक फैली हुई भारत की सामुद्रिक और पर्वतीय सीमाओं का विशेष स्थान रहा है। हिन्द महासागर में भारत का सबसे बड़ा हित यह है कि वह स्वतन्त्र, एवं शान्ति का क्षेत्र बना रहे। भारतीय परिवहन, व्यापार व विशेष रूप से भारतीय सुरक्षा इन्हीं पर निर्भर है।

(2) गुटनिरपेक्षता :

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व दो गुटो पूँजीवाद और साम्यवाद में बँटा हुआ था। इन दोनों में अधिक मनमुटाव के कारण शीत युद्ध चल रहा था। भारत ने इन दोनो गुटो से अलग रहकर अपने आपको गुटनिरपेक्ष देश रखा। गुटनिरपेक्षता की स्थिति भारत को दोनो गुटों के मध्य मध्यस्थ का कार्य कर अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने में सहायता देती है।

(3) विचारधाराओं का प्रभाव :

भारत की विदेश नीति के निर्धारण में अनेक विचारधाराओं का स्पष्ट प्रभाव है। महात्मा गांधी की शान्ति और अहिसा पर आधारित गाँधीवादी विचारधारा से भारत की विदेश नीति प्रभावित है। भारतीय संविधान की धारा 51 में राज्य नीति के निर्देशक तत्त्वों में विदेश नीति के निर्धारण मे इसका प्रभाव स्पष्ट है। हडसन के शब्दों में, "गांधी के शान्तिवाद ने देश को यह भरोसा दिलाया कि विश्व में शान्ति 'समझोता से स्थापित हो सकती है, न कि रक्षात्मक संगठन बनाने से। भारत का यह कर्तव्य है कि वह विरोधी पक्षो से अलग रहे और उनमें मध्यस्य का कार्य करे।" महात्मा गाँधी के अतिरिक्त भारत की विदेश नीति गौतम बुद्ध और अशोक की अहिंसा, अकबर और शिवाजी की सहिष्णुता, अरविन्द, टैगोर और एम. एन. राय के मानवतावादी विचारों से भी प्रभावित है।

(4) आर्थिक तत्त्व :

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारत का आर्थिक विकास तभी सम्भव है जब वह सभी देशो के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखे। इसीलिए भारत किसी भी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ। निर्गुट रहने के कारण ही भारत को दोनो गुटो से पर्याप्त आर्थिक और तकनीकी सहायता मिलती रही है। जे. वन्द्रो उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'दि मेकिग ऑफ इण्डियाज फॉरन पॉलिसी' में भारत की विदेश नीति के आर्थिक आयाम बताये है उनमें तीन प्रमुख है—सुरक्षा, विदेशी सहायता और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार।

(5) सैनिक तत्त्व :

भारत सैनिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं था, वह अप्नी सुरक्षा के लिए विदेशों पर निर्भर रहा है। इसीलिए भारत महाशक्तियों से मैत्री सम्बन्ध बनाये रहा है। अब भी भारत अपने सैनिक साजो—सामान के लिए विदेशों पर बहुत कुछ निर्भर है।

(6) पं. नेहरू का व्यक्तित्व :

पं. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री और विदेशमन्त्री दोनों ही थे। ये साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और फासीवाद के विरोधी थे। वे महाशक्तियों के संघर्ष में भारत को अलग रखने के पक्ष में थे। ये विचार आज भी भारत की विदेश नीति के आचार है।

(7) राष्ट्रीय हित :

पं. नेहरू ने संविधान सभा में कहा था कि, "किसी भी देश की विदेश नीति की आधारशिला उसके राष्ट्रीय हित की सुरक्षा होती है और भारत की विदेश नीति का ध्येय यही है।" भारत के राष्ट्रीय हित दो प्रकार के हैं—स्थायी और अस्थायी। स्थायी राष्ट्रीय हित हैं— देश की अखण्डता और सुरक्षा तथा अस्थायी राष्ट्रीय हित है— खाद्यान्न, विदेशी पूँजी, तकनीकी विकास, जनता के जीवन स्तर को उठाना एवं आर्थिक समृद्धि आदि।

(8) ऐतिहासिक परम्पराएँ :

भारत को अपनी प्राचीन संस्कृति और इतिहास है। भारत की नीति सदैव शान्तिप्रिय रही है। भारत ने किसी दूसरे देश पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया। यह ऐतिहासिक परम्परा भारत की वर्तमान विदेश नीति में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। भारत की विदेश नीति की मुख्य विशेषताएं: जैसे— शान्ति, समन्वय और सहिष्णुता है जो प्राचीन भारतीय इतिहास की देन हैं।

(9) उपनिवेश :

विरोधी भावना शताब्दियों तक विदेशी शक्ति के आधीन रहने के कारण भारत को यह कटु अनुभव है कि विदेशी शासन देश के विकास के लिए बहुत हानिकारक होता है। इसलिए भारत ने स्वतन्त्र होने के पश्चात् प्रत्येक पराधीन देश में स्वाधीनता आन्दोलन को अपनी सहानुभूति प्रदान की। भारत में ट्यूनिस, साइप्रस, मोरक्को, अल्जीरिया, लीबिया, नामीबिया आदि राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का संयुक्त राष्ट्रसंघ में सदैव समर्थन किया। भारत ने नामीबिया में दक्षिणी अफ्रीका को सरकार द्वारा अपनायी जाने वाली रंगभेद की नौति की कटु आलोचना की है।

(10) विश्व शान्ति के प्रति दृष्टिकोण :

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पं. नेहरू ने 17 अक्टूबर, 1949 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय (अमरीका) में सम्बोधित करते हुए कहा था, "विश्व शान्ति का अनुसरण करना, किसी बड़ी शक्ति अथवा गुट के साथ संलग्न नहीं होगा वरन् विवादपूर्ण मामलों में स्वतन्त्र दृष्टिकोण अपनाना, आधीन जातियों को स्वतन्त्रका व्यक्तिराष्ट्रीय स्वतन्त्रता को बनाये रखना, प्रजातीय भेदभाव को दूर करता तथा भूख बीमारी एवं निरक्षरता को दूर करना भारत की विदेश नीति के मुख्य आधार है।"

भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्त (Main Principles of India's Foreign Policy) भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित है[2]

(1) गुट निरपेक्षता (Non & Alignment) :

गुट निरपेक्षता या असंलग्नता भारत को विदेश नीति का सबसे महत्त्वपूर्ण और विलक्षण सिद्धान्त है।

सकारात्मक रूप से गुट निरपेक्षता का तात्पर्य है एक स्वतन्त्र विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों मे सक्रिय योगदान, प्रत्येक मामले को उसके गुण–दोषो के आधार पर जांचना तथा भारत के राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय केन्द्र। नकारात्मक रूप से उसका तात्पर्य है– शीत युद्ध सन्धियों तथा शक्ति राजनीति से दूर रहना। एम. एस. राजन के शब्दों में, "विशेषतया तथा नकारात्मक रूप से गुट निरपेक्षता का अर्थ राजनीतिक या सैनिक सन्धियों की अस्वीकृति, सकारात्मक रूप से इसका अर्थ या विषय के लाभी के आधार पर जब कभी भी या जैसी आवश्यकता हो, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर "तदर्भ निर्णय लेना।" गुट निरपेक्षता की नीति का अर्थ सकारात्मक है अर्थात् जो सही और न्यायसंगत है उसकी सहायता और समर्थन करना तथा जो अनीतिपूर्ण एवं अन्यायसंगत है उसकी आलोचना एवं निन्दा करना। अमरीकी सीनेट में एक बार पं. नेहरू ने कहा था कि, यदि स्वतन्त्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अयवा कहीं आक्रमण होगा तो वहाँ हम न तो आज तटस्थ रह सकते है और न भविष्य में तटस्थ रहेंगे।"

(2) साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का विरोध (Opposition to Imperialism and colonialism) :

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन भारत दासता के दुष्परिणामों से परिचित रहा। अतः उसके लिए साम्राज्यवाद का विरोध करना स्वाभाविक है। पं. नेहरू ने ब्रुसेल्स (Brussels) में एक सम्मेलन में कहा था कि, "साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारत का संघर्ष मात्र एक राष्ट्रीय समस्या नहीं है। इसका सीधा प्रभाव कई राष्ट्रों पर पड़ता है। विश्व के किसी भी भाग में साम्राज्यवाद का अस्तित्व भारत को अस्वीकार्य है। भारत के लिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष जीवन–मृत्यु का प्रश्न है।"

(3) नस्लवादी भेदभाव का विरोध (Opposition to Racial Discrimination) :

भारत सभी नस्लों की समानता में विश्वास रखता है तथा किसी भी नस्ल के लोगों से भेदभाव का पूर्ण रूप से विरोध करता है। अपनी स्वतन्त्रता से पहले भारत ने दक्षिणी अफ्रीका की प्रजाति पार्थक्य (Apartheid) को नीति के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्रसंघ में बराबर यह प्रश्न उठाता रहा है। भारत प्रजाति विभेद का इतना घोर विरोधी या कि उसने दक्षिणी अफ्रीका के साथ अपने राजनयिक सम्बन्ध तोड़ लिये थे।

(4) साधनों की शुद्धता (Purity of Means) :

भारत की विदेश नीति अवसरवादी और अनैतिक नहीं है। भारत की विदेश नीति महात्मा गाँधी के इस सिद्धान्त से प्रभावित रही है कि न केवल उद्देश्य बल्कि उसकी प्राप्ति के साधन भी पवित्र होने चाहिए। भारतीय संविधान के भाग IV में दिये गये नीति–निर्देशक सिद्धान्तों में अनु. 51 में "राज्य कहा गया है

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(i) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा अभिवृद्धि का,
(ii) राष्ट्री के बीच न्यायपूर्ण और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने का
(iii) सगठित लोगों के, एक–दूसरे से व्यवहारों में अन्तर्राष्ट्रीय विधि और सन्धि बन्धनों के प्रति आदर बढ़ाने का,
(iv) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा निपटाने के लिए प्रोत्साहन देने इत्यादि का प्रयत्न करेगा।"

(5) पंचशील (Panchsheel) :

पं. नेहरू ने भारत की विदेश नीति को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए 'पंचशील' सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। ये पांच सिद्धान्त चीन के लिये वनाये गये थे, जो निम्नलिखित है[3]

(i) एक–दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना,
(ii) अनाक्रमण,
(iii) एक–दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना,
(iv) समानता तथा पारस्परिक लाभ,
(v) शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व।

(6) संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा विश्व शान्ति के लिए समर्थन (Support for U.N.O. and World Peace) :

भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के मूल सदस्यों में से एक है। भारत ने सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया था तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर पर हस्ताक्षर किये थे। तब से लेकर आज तक भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के क्रिया–कलापों का समर्थन किया है तथा इनमें सक्रियता से भाग लिया है। पं. नेहरू का विश्वास था कि, "हम संयुक्त राष्ट्रसंघ के बिना आधुनिक विश्व की कल्पना नहीं कर सकते।[4]

(7) तीसरे विश्व के साथ एकता (Solidarity with the Third World) :

पं. नेहरू भारतीय स्वतन्त्रता को एशिया की उन्नति के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थिति मानते थे। इसलिए उन्होंने एशिया में शान्ति तथा सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दिया। बाद में यही विचार अफ्रीकी–एशियाई एकता की अवधारणा के रूप में विकसित हुआ। तीसरे विश्व की शान्ति तथा विकास को अवधारणा बाद में जन्मे नये स्वतन्त्र तथा विकासशील राष्ट्रों की अवधारणा बन गई। 7 सितम्बर, 1946 को पं. नेहरू ने अपने भाषण में कहा, "हम एशिया में रहने वाले है तथा एशिया के लोग दूसरों की अपेक्षा दूसरे से अधिक निकट तथा निकटतम है।" (We are of Asia and People of Asia are nearer to us them others-)

(8) सभी के साथ मित्रता (Friendship with all) :

भारत की नीति सभी के साथ शान्ति और मित्रता की है। भारत साम्यवादी और पूँजीवादी सभी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध रखना चाहता है। भारत ने पड़ोसी देशों के साथ भी मित्रता की नीति अपनायी है। भारत ने पाकिस्तान से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखने के लिए अनेक बार वार्ताएँ की। समझौता एक्सप्रेस, लाहौर बस यात्रा, आगरा वार्ता (अटल बिहारी वाजपेयी और जनरल मुशर्रफ के मध्य) इसकी साक्षी है। नेपाल, बंगलादेश तथा श्रीलंका जैसे छोटे राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में कभी– हस्तक्षेप नहीं किया बल्कि आर्थिक सहायता देकर उनकी आर्थिक व्यवस्था को स्थिर बनाने का प्रयास किया है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(9) भारत के राष्ट्रीय हितों पर आधारित स्वतन्त्र विदेश नीति (Independent Foreign Policy) :

(based upon National Interest of India) :

भारत ने पिछले वर्षों में गुट निरपेक्षता की जो स्वतन्त्र नीति अपनायी है उसका आधार राष्ट्रीय हित है। इस नीति ने निर्णयों का निर्धारण करते समय आत्मसम्मान तथा स्वतन्त्रता के प्रति आस्था प्रकट की है। नेहरू जी का यह विचार सही था कि किसी भी एक गुट में सम्मिलित होने से दूसरे शक्ति गुट से सहायता प्राप्त करना सम्भव नहीं हो सकेगा। इसके अतिरिक्त भारतीय राष्ट्रीय हितो को ध्यान में रखकर किसी स्थिति को अपने स्तर पर जांचने व स्वतन्त्र नीति अपनाने के लिए अपने दृढ़ निश्चय पर एक प्रतिबन्ध लगेगा।

(10) निःशस्त्रीकरण का समर्थन (Support for Disarmament) :

भारत सभी प्रकार के शस्त्रों की होड़ रोकने का समर्थक है। इसके लिए जो शस्त्र बनाये जा रहे हैं वे न बनाये और जो बने हुए है उन्हें नष्ट कर दिया जाये। केवल निःशस्त्रीकरण ही अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को सुदृढ़ बना सकता है। निःशस्त्रीकरण से बचाये गये धन और साधनों के उपयोग से सभी राष्ट्रों का विकास हो सकता है। भारत निःशस्त्रीकरण द्वारा शान्ति लाने के पक्ष में है। भारत का छह NAM देशों के निःशस्त्रीकरण शिखर सम्मेलन को अपने देश में कराने का प्रयास बहुत सफल रहा है।

भारत की विदेश नीति समय के अनुसार बदलती रही है, उसका कारण केन्द्र में किस प्रकार की सरकार है। भारत के एशिया एवं यूरोप के देशो के साथ लोकतंत्रात्मक संबन्ध उदारीकरण पर आधारित है, जिसमें भारत की भावना सभी देशों के साथ व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक है।[5]

संदर्भ सूची :

1. एस. सी. सिंघल अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा 2004 पृ. 256
2. वही पृ. 258
3. वही पृ. 258
4. वही पृ. 262
5. वही पृ. 265